'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११४ | वाराणसी, मंगलवार, ५ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

विजयपुर (जम्मू) १४-९-'५९

लोकशक्ति ही लोकशाही का आधार

आजादी हासिल किये बारह साल हो गये हैं। इन बारह सालों में अपनी सरकार ने लोगों की खिदमत के लिए, खास कर देहाती लोगों की खिदमत के लिए कुछ काम किये हैं। उसने एक योजना भी बनायी है, उसे विकास-योजना या विस्तार-योजना कहते हैं।

७५ हजार शांति-सैनिक चाहिए

आज उस विकास-योजना में काम करनेवाले कुछ सेवक हमसे मिलने आये थे। उनसे हमें कुछ जानकारी मिली और यह मालूम हुआ कि इस छोटी-सी तहसील में ३३४ गाँव हैं और इसकी आबादी अस्सी हजार है। याने हर गाँव की आबादी औसतन दो-ढाई सौ होगी। वैसे हिन्दुस्तान के हर गाँव की आबादी औसतन ५०० है, लेकिन यह जंगल, पहाड़ों का मुल्क है, इसलिए यहाँकी आबादी कम है। सरकार ने यहाँ सत्रह सेवक नियुक्त किये हैं, जिनके जरिये ३३४ गाँवों के ८०,००० लोगों की सेवा होगी। याने एक सेवक बीस गाँवों के ७ हजार लोगों की सेवा करेगा। यह सब सुनकर हमें शांतिसेना की याद आयी, जिसकी योजना हमने जाहिर की है कि हर पाँच हजार लोगों के लिए एक सेवक की हैसियत से हमें सारे हिन्दुस्तान में ७५ हजार शांति-सैनिक चाहिए। उसके मुताबिक अब कुछ थोड़ा काम भी शुरू हो गया है।

जैसे हम रोज घूमते हैं, वैसे ही यहाँ विकास-योजना के सेवकों को घूमना पड़ेगा, तभी उनका सब गाँवों के साथ ताल्लुक बना रहेगा। हमें खुशी है कि सरकार ने ऐसी योजना बना दी।

सर्वोदय-समाज की पहचान

हम चाहते हैं कि जैसे सरकार ने यह योजना बनायी, वैसे ही लोगों की तरफ से भी योजना बने। लोग अपने में से हर पाँच हजार की आबादी के लिए एक सेवक खड़ा करें। उसके पीछे अपनी सम्मति बनाये रखने के लिए हर घर में सर्वोदय-पात्र रखें और उसे अपना समझकर जो-जो काम वह सुझाये, उसमें मदद दें। ये सेवक मामूली वक्त में गाँव-गाँव जाकर प्रेमभाव बढ़ाने का काम करेंगे। उसकी एक अलामत, पहचान, निशानी यह होगी कि उस इलाके से कोर्ट में कभी केस नहीं जायँगे। खास मौके पर, कहीं अशांति हो तो वे सेवक ही शांति की स्थापना के लिए मर मिटने के लिए राजी होंगे। किसीने यह दिखा दिया कि किसी एक तहसील में से कोर्ट में एक भी केस नहीं जाता है और लोग अपने झगड़ों का निपटारा आप कर लेते हैं तो मैं कहूँगा कि बेहतर सर्वोदय-समाज की स्थापना हुई। दूसरे लक्षण आगे-पीछे आयेंगे ही, लेकिन सर्वोदय-समाज बना या नहीं, इसकी परख तो हम इसी बात से करेंगे कि उस इलाके में कोर्ट में न जाने के कारण वकील, मजिस्ट्रेट बेकार हुए हैं, मजिस्ट्रेट को रोज यही लिखना पड़ता है कि 'आज कोई केस नहीं', तिसपर भी सरकार ने कोर्ट जारी रखा तो मजिस्ट्रेट को चर्खा दे देंगे। यह बात छोटी सी दीखती है, लेकिन छोटी नहीं है। पेड़ को फल आया तो वह छोटा दीखता है, लेकिन उसके पीछे बीज, पौधा, पेड़, डालियाँ, पत्ते, फूल यह सारा काम हुआ है, जिसका नतीजा वह फल है। इसी तरह कोर्ट में केस जाता हो, ऐसा तब होगा, जब लोगों की जिन्दगी मिली-जुली बनेगी, सबको लगेगा कि हमारा गाँव एक कुनबा है। जैसे बच्चे खेलते-खेलते झगड़ा करते हैं तो वह झगड़ा कोर्ट में नहीं ले जाते हैं, वैसे ही यह होना चाहिए कि गाँव में कहीं झगड़ा हुआ तो गाँव के लोग ही उसका निपटारा कर लें और फिर से सब लोग इत्मीनान से रहने लगें। यह तो हुआ फल, लेकिन उसके पहले फूल भी जरूरी है। गाँव का एक कुनबा बनाना—यह फूल है! लेकिन फूल पैदा होने के लिए पत्तियाँ, डालियाँ वगैरह भी चाहिए। जमीन की मिल्कियत मिटाना और जमीन पर काम करने का मौका हरएक को देना, जमीन की खिदमत से किसीको महरूम न रखना, गाँव के सब भाइयों को काम देने की जिम्मेवारी उठाना, गाँव में किसीको बेकार न रहने देना, गाँव में उद्योग बढ़ाना—यही सब पत्तियाँ, डालियाँ वगैरह हैं।

आज हमने खादी-उत्पादन-केन्द्र देखा, वहींपर बहनें सूत कातती हैं, उन्हें मजदूरी दी जाती है। उनके सूत का कपड़ा जम्मू, श्रीनगर जैसे शहरों में बेचा जाता है। लेकिन यह स्वराज्य सर्वोदय-समाज का लक्षण नहीं है।

सर्वोदय-समाज

आज बाजार में पचासों चीजें बिकती हैं, उनमें थोड़ी सी

www.vinoba.in

खादी बिके तो उतने से सर्वोदय-समाज नहीं बनेगा। सर्वोदय-समाज तो तब बनेगा, जब गाँव के लोग तय करेंगे कि हम गाँव में बनी हुई खादी पहनेंगे, बाहर का कपड़ा नहीं खरीदेंगे। तब गाँव की बहनों को और बेकार लोगों को काम मिलेगा। उसी तरह तेल, गुड़, रस्सी वगैरह चीजें भी गाँव में बननी चाहिए। जिन चीजों का कच्चा माल गाँव में मौजूद है और जिसके पक्के माल की गाँव को जरूरत है, वह पक्का माल गाँव में बन सके तो गाँव में ही बनाया जाय। गाँव के लोग तय करेंगे कि हम अपने गाँव में ही बनी हुई चीजें इस्तेमाल करेंगे तो बेकारी खत्म होगी। ऐसा होने से गाँव में जमीन के बारे में असमाधान नहीं रहेगा और गाँववाले अनुभव करेंगे कि हमारा एक कुनबा है, तब यह फल दिखाई देगा कि कोर्ट खाली हो गये।

अच्छा साहित्य पढ़ें

विकास-योजना में काम करनेवाले भाइयों से हमने कहा कि सरकार ने आपको तनख्वाह दी है तो लोगों ने ही दी है, क्योंकि लोगों का ही पैसा सरकार के पास है, इसलिए तुम शांति सैनिक हो, ऐसा ही मान लो और उसी हैसियत से लोक-सेवक बनकर काम करो। मैंने उनसे पूछा कि आपको कितनी तनख्वाह दी जाती है तो पता चला कि उनके काम के लिए मैट्रिक तक की पढ़ाई जरूरी मानी गयी है। फिर उन्हें थोड़ी तालीम देकर काम में लगाया जाता है। मैट्रिक पास किये हुए को शुरू में ६० रुपया तनख्वाह दी जाती है और हर साल ५ रुपया बढ़कर आठ साल में उसकी तनख्वाह १०० रुपया होगी और वही कायम रहेगी। जो मैट्रिक फेल है, उसे शुरू में ५० रुपया मिलेगा और हर साल ४ रुपया बढ़कर आठ साल में ८२ रुपया होगा। हमें लगा कि यह योजना भी अच्छी है। इस तनख्वाह में बहुत ज्यादा फर्क नहीं रखा है और देहातों की हालत के साथ तुलना करके देखने पर यह तनख्वाह ठीक ही मालूम होती है, बहुत ज्यादा भी नहीं और कम भी नहीं। लेकिन मैंने उन सेवकों को सलाह दी कि उस कम तनख्वाह में से भी आप एक रुपया महीना अच्छी किताबें खरीदने के लिए अलग रखें। चाहे ५० रुपये में आपके परिवार के लिए पूरा खाना न भी मिलता हो तो भी यह एक रुपया अलग रखेंगे तो आपको रूहानी गिज़ा, आध्यात्मिक अन्न मिलेगा। उससे आपको तुलसी रामायण, जपुजी, गांधी-साहित्य, गीता-प्रवचन, सर्वोदय-साहित्य आदि का अध्ययन करना चाहिए। सालभर में बारह रुपये की किताबें उसके पास आयेंगी। वैसी किताबें पढ़ने से आपके विचारों में ताजगी रहेगी। जब मैंने पूछा कि इन सेवकों को क्या पढ़ने को मिलता है तो मालूम हुआ कि कुछ खास नहीं मिलता है, कुछ सरकारी रिपोर्टस् वगैरह मिलते हैं। देहातों में काम करने के कारण अखबार भी नहीं मिलते हैं। वह तो ठीक ही है, क्योंकि अखबार न मिलने से बहुत सारी झगड़ों की बातें उनके दिमाग में नहीं जाती हैं। लेकिन उनको ज्ञानी, अनुभवी लोगों का साहित्य रोज पढ़ना चाहिए और उसका चिन्तन, मनन करना चाहिए।

खूब घूमें

अध्ययन के साथ ही साथ आपको खुले आसमान में घूमना चाहिए। लंबा आसमान दीखता है तो दिल छोटा नहीं रहता। दिल और दिमाग वसी बन जाते हैं। शहरों में छोटे-छोटे कमरों में रहनेवालों का दिल भी उस कमरे के जितना छोटा बनता है, लेकिन खेत में काम करनेवाले किसान को या मेरे जैसे खुले आसमान में घूमनेवाले यात्री को आसमान से गिज़ा (अन्न) मिलती है। हमें समझना चाहिए कि मनुष्य के लिए खाने की चीजों में सबसे बड़ी चीज रोटी नहीं है। मनुष्य रोटी के बिना ३-४ महिने तक रह सकता है, लेकिन पानी के बिना एक महीना भी नहीं रह सकता है, इसलिए पानी की अहमियत ज्यादा है। स्वच्छ, ताजे पानी से पोषण मिलता है और दिमाग ताजा बनता है। उससे ज्यादा अहमियत हवा की है। हवा के बिना १०-१५ मिनट से ज्यादा रहना मुश्किल है। खुली हवा और सूरज की रोशनी बड़ी अहम चीजें हैं। यह सब तो ठीक है, लेकिन इन सबसे अहम गिज़ा, श्रेष्ठ अन्न है आसमान। हमारे अपढ़ किसान सारा ज्ञान पाते हैं, उसकी वजह यही है कि वे खुले आसमान में काम करते हैं। शांत, निरव आकाश इनसे बोलता है। जैसे मैं आपसे बातें कर रहा हूँ, आपको ज्ञान दे रहा हूँ, आप ज्ञान पा रहे हैं—यह सारा व्यवहार साफ, स्पष्ट है, वैसे ही आसमान भी हमारे साथ बोलता है। कभी-कभी उससे आवाज आती है, वह प्रतिध्वनि करता है। हम गाली दें तो वह गाली देता है। हम रामनाम लें तो वह भी रामनाम लेता है। आसमान में शब्द भरे हुए हैं, हम भले ही कानों से उन्हें न भी सुनें। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों ने, फकीरों ने, वली, नबियों ने जो सोचा, जो कहा, वह सब आसमान में भरा हुआ है, छिपा हुआ है। अभी रेडियो बताता है, देहली या लन्दन से कोई बोल रहा हो तो हम यहाँसे सुन सकते हैं, सिर्फ उसे पकड़ने की तरकीब चाहिए। आसमान में ज्ञानियों की आवाज भरी है, मूर्खों की आवाज इनकी जिस्म के साथ ही दहन या दफन हुई। हमारे इन कानों के अन्दर दूसरे कान होते हैं। उन अन्दरूनी कानों से आसमान की आवाज सुनाई देगी और उससे दिल बड़ा बनेगा, दिमाग ताजा बनेगा। इसलिए तुम लोग रोज खूब घूमो।

खुद पढ़ो, दूसरों को सुनाओ

खुद अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ो और गाँव-गाँव जाकर लोगों को भी सुनाओ। बार-बार सुनाने से उसका जप होगा। जैसे वैद्य दवाई घोटते हैं, रगड़ते हैं, वैसे ही बार-बार पढ़ने से ज्ञान रगड़ा जाता है और फिर वह बिल्कुल मुलायम, नर्म बनकर हमारी नस-नस में घुस जाता है। सारी जिस्म में, खून के कतरे-कतरे में मिल जाता है। माला जपने के बजाय किताबें बार-बार पढ़ो। तुम जो पढ़ोगे, सुनोगे, उसे बोलना शुरू कर दो। यह मत सोचो कि क्या हम उपदेश देने के अधिकारी हैं। उपदेश देने का अधिकार न हो तो भी जप करो। तोता बोले तो कहो 'सीताराम, सीताराम।' तुलसीदास की जबान, जपुजी का शब्द, गीता की ध्वनि—यह सब तुम्हारी जबान में आ जाय और तुम लोगों को यह सब सुनाने लगोगे तो तुम्हारी जिंदगी पाक, पवित्र बनेगी। दुनिया में सब से बढ़कर कोई शक्ति है तो 'शब्द शक्ति' है। उससे बढ़कर और कोई शक्ति नहीं है। इसलिए अच्छा शब्द बार-बार पढ़ो।

वेतन के साथ-साथ अनाज भी मिले

एक बात मैं सरकार से कहना चाहता हूँ। लेकिन सरकार की सरकार हैं आप (जनता)। इसलिए आप ही के सामने रखता हूँ। मेरी राय में जितने छोटे-बड़े सरकारी नौकर हैं, उन सबको उनके परिवार के लिए जितने अनाज की जरूरत है, उतना देना चाहिए। अगर किसीकी तनख्वाह २०० रु० है तो उसे १६० रु० दिये जायँ और बाकी निश्चित अनाज दिया जाय। फिर अनाज के दाम ऊपर-नीचे चढ़ें तो भी कोई पर्वाह नहीं।

www.vinoba.in

हिन्दुस्तान में ५५ लाख सरकारी नौकर हैं। उनके परिवार के लोगों को गिनकर तीन करोड़ की जमात बनेगी। इतने लोगों को तय किया हुआ अनाज मिलेगा तो बहुत बड़ी बात होगी।

आज सरकारी नौकरों की यह हालत है कि अनाज के दाम ऊपर-नीचे चढें तो वे सोचते हैं कि अब गुजारा कैसे हो? इस प्रहार से उनके लिए जीना मुश्किल हो जाता है। सरकार ने मुलाजिमों (नौकरों) का जो एक मध्यम वर्ग बनाया है, उसे उसकी तनख्वाह की निश्चित रकम के साथ-साथ निश्चित अनाज भी मिले।

मेरी यह बात सुनकर सरकारी नौकर खुश हो गये। उन्होंने कहा कि ५० रु० तनख्वाह के बदले ४० रु० ही मिलें और बाकी अनाज मिले तो उतने में निभ जायगा।

लगान : अनाज के रूप में

एक बात और मैं सरकार से कहना चाहता हूँ, लेकिन उसके लिए आप भी आवाज उठायें। किसान सरकार से कहें कि हमसे पैसे में लगान क्यों लेते हो? पैसे से बढ़कर जो चीज हमारे पास पड़ी है, वह बेचने के लिए हमें क्यों मजबूर करते हो? तय करके अनाज के रूप में हमसे लगान लो, फिर बाजार में दाम कुछ भी हो। कहीं अकाल हो तो अलग बात है। लेकिन सरकार अनाज के रूप में लगान लेगी तो उसके पास अनाज इकट्ठा होगा और किसान को भी अनाज बेचना नहीं पड़ेगा। क्या हमारे पास सोना है तो आप यह कहेंगे कि हम सोना नहीं लेते? सोना बेचकर नोट दो। अनाज तो सोने से बढ़कर चीज है। इसलिए लगान अनाज के रूप में ही लो। साथ-साथ सरकार सब सरकारी नौकरों को तयशुदा अनाज देने का तय करेगी तो तीन करोड़ के मध्यम वर्ग को हमने बचा लिया, ऐसा कह सकते हैं। फिर वह वर्ग सुख-चैन से जीयेगा। बाजार में दूसरी चीजें सस्ती या महँगी हों तो उसकी पर्वाह नहीं। लोगों को अनाज मिल जाय, जो अहम चीज है तो वे बच जायँगे। अनाज मिलने से लोग सुखी रहते हैं।

सारी जनता भी ध्यान दे

गाँव-गाँव के लोगों से मैं यह भी कहूँगा कि उन्हें अपने गाँव के लिए मजदूरों के लिए, जितना अनाज चाहिए, उतना रख लेना चाहिए और मजदूरों को भी तयशुदा अनाज देना चाहिए और ऊपर से थोड़ा पैसा भी देना चाहिए। हिन्दुस्तान के ३७॥ करोड़ की आबादी में से ३० करोड़ लोग गाँवों में रहते हैं। इस योजना से वे तीस करोड़ बच जायँगे, उन्हें बाजार से अनाज नहीं खरीदना पड़ेगा। साथ ही साथ तीन करोड़ सरकारी नौकर भी बच जायँगे तो जो ४॥ करोड़ रह जाते हैं, उनमें व्यापारी, वकील, डॉक्टर, साहूकार वगैरह होंगे। वे महँगा अनाज भी खरीद सकते हैं। इस प्रकार ३३ करोड़ लोग अगर बाजार-भाव से बच गये तो फिर जैसे आज अनाज का भाव ऊपर-नीचे हुआ करता है और समाज में उथल-पुथल होती है, वह नहीं होगी। मैं चाहता हूँ कि अवाम (जनता) में यह भावना पैदा हो जाय। जनता की आवाज उठेगी तो सरकार पर उसका तुरत दबाव पड़ेगा।

सरकारी सेवक नहीं, लोक-सेवक

सरकार के सेवक कुछ काम करते ही हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि लोक-सेवक खड़े हों। वे सेवक ऐसे होंगे, जो लोगों पर आधार रखेंगे, सबकी सेवा करेंगे, हर रोज कुछ न कुछ परिश्रम का काम करेंगे, कोई बीमार हो तो उसके लिए दवा का इन्तजाम करवायेंगे, उसके पास बैठकर जागेंगे, गाँव में झाड़ू लगायेंगे, कहीं झगड़ा हो तो दोनों पक्षों की बातें सुनेंगे और शान्तिपूर्ण ढंग से झगड़ा निपटाने की कोशिश करेंगे। सरकारी नौकर चाहेंगे तो भी इतना नहीं कर सकेंगे। इसलिए लोगों की तरफ से सेवक खड़े होने चाहिए, तभी काम बनेगा। इनके पास लोगों का दिल खुलेगा, सरकारी नौकरों के पास नहीं खुलेगा। ऐसे सेवकों के लिए घर-घर में सर्वोदय-पात्र रखे जायँ, तब लोकशक्ति जागृत होगी। आज बख्शी क्या बख्शेंगे, इसीपर सारा दारोमदार है। इनकी कृपा हो तो लोगों का ठीक चलेगा और कृपा न हो तो ठीक वहीं चलेगा। जैसे पुराने जमाने में बादशाह पर लोगों का नसीब लटकता रहता था, वही खतरा आज भी मौजूद है। आज की लोकशाही कागजी लोकशाही है। पाँच साल के लिए कुछ लोगों के हाथ में सत्ता दे दी जाती है, लेकिन विज्ञान के कारण आज की सरकार को इतनी ताकतें मुहैया हैं कि आज के पाँच साल याने पुराने जमाने के पचास साल।

लोकशक्ति के बिना लोकशाही नहीं

अभी हम डेढ़ मील लम्बी टनेल, सुरंग देखकर आये। क्या पुराने जमाने में किसीके पास ऐसी ताकत थी कि पहाड़ खोदकर ऐसी टनेल बनाये? पुराने जमाने में देहली के बादशाह ने आसाम के सरदार को हुक्म दिया तो उसका हुक्म सरदार के पास पहुँचते-पहुँचते दो-तीन महिने लग जाते थे। फिर उसका जवाब आने में और दो महीने लगते थे। इस तरह सवाल-जवाब होते-होते महीनों बीत जाते थे। तिसपर भी सरदार ने हुक्म न माना तो बादशाह को फौज लेकर जाना पड़ता था। लेकिन आज देहली से जिस दिन हुक्म हुआ, उसी दिन उसी मिनट पर केरल में उसपर अमल हुआ। इसलिए जब तक लोकशक्ति जागृत नहीं होगी, तब तक नाम की ही लोकशाही चलेगी और असल में पुराने बादशाहों के जमाने के जैसी ही हालत रहेगी। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

जम्मू-कश्मीर २०-५-'५९

'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' की ओर

[जम्मू-कश्मीर राज्य की यात्रा का यह आखिरी दिन था। राज्य-सरकार की तरफ से उद्योग-मंत्री श्री श्यामलाल सराफ तथा नेशनल कान्फ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी श्री बक्षी अब्दुल रशीद ने आरम्भ में भाषण करते हुए कहा कि 'विनोबाजी की यात्रा का कश्मीर पर बहुत असर हुआ है। हम सब आपके मार्गदर्शन में चलने की कोशिश करेंगे।']

आज मुझे बहुत ज्यादा नहीं बोलना है, बल्कि यहाँ कदम रखते हुए जो बात मैंने कही थी, उसमें मैं कहाँ तक कामयाब हुआ, इसका इजहार करके आपसे बिदा लेने का ही यह मौका है। मैंने इस स्टेट में कदम रखते ही कहा था कि मैं यहाँपर देखने, सुनने और प्यार करने आया हूँ। सुनने और देखनेवाले को और जो प्यार करना चाहता है, उसको प्यार के लिए कभी-कभी बोलना पड़ता है और विचार-सफाई के लिए भी

बोलना पड़ता है। उतना तो मैं बोलूँगा, लेकिन मेरा मिशन देखने, सुनने और प्यार करने का ही है, यह बात मैंने कही थी। मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे उस मक़सद में अच्छी कामयाबी हासिल हुई है।

सुनने की मंशा

मुझे जो सुनना था, वह सब लोगों ने सुनाया है, जितना सुनने की जरूरत थी, उससे ज्यादा सुनाया है, लेकिन हर हालत में जो कुछ सुनाया है, दिल खोलकर सुनाया है। जिन्होंने अपने विचार मेरे सामने रखे वे एक-दूसरे के मुख्तलिफ थे, एक-दूसरे से डरते हुए भी पाये गये और उन्हें एकान्त में बात करने की जरूरत महसूस हुई, इसलिए हमने एकान्त में भी बात की और मुझे यह कहने में खुशी होती है कि जिस-किसी जमात के साथ हमारी बात हुई, चाहे वह सियासी जमात थी, मजहबी जमात थी या समाजी जमात थी, चाहे चन्द व्यक्ति थे, उन सबने यह महसूस किया कि यह अपना ही आदमी है और इसके सामने दिल खोलकर बात रखने में कोई खतरा नहीं है, बल्कि इसकी तरफ से हमारे लिए हमदर्दी ही रहेगी और जवाब में साफ बातें ही कही जायँगी। ऐसा विश्वास रखकर लोगों ने हमारे सामने अपनी बातें रखीं और मेरी सुनने की जो मंशा थी, उसमें हम पूरे कामयाब हुए।

देखने की मंशा

मेरी देखने की जो मंशा थी, उसमें हम कुछ कामयाब हुए हैं, पूरे कामयाब नहीं हुए हैं। क्योंकि सैलाब की वजह से कुछ हिस्सा देखने का रह गया। सैलाब न आता तो हम और हिस्से भी देखते। जो मियाद, मुद्दत हमने बाँध रखी थी, उसमें हम और हिस्सों में भी जा सकते थे। हमारी कृष्णा बहन (कृष्णा मेहता, सदस्य, लोक सभा) का जन्मस्थान किश्तवाड़ में भी हम जाना चाहते थे, लेकिन नहीं जा सके। उसमें वक्त की कमी भी एक कारण था और सैलाब की वजह से हमें कुछ जगहों पर ज्यादा रुकना पड़ा था, इसलिए देखने में हम सौ फी-सदी कामयाब हुए, ऐसा नहीं कह सकते हैं। लेकिन चावल पका है या नहीं, यह देखने के लिए चावल का हर दाना देखने की जरूरत नहीं रहती है। थोड़ा-सा देखने पर मालूम हो जाता है। इसलिए मैंने जो देखा और काफी देखा, उससे काफी खयाल आ सकता है। अगरचे इस स्टेट का पूरा दर्शन करना हो तो चार महीने नाकाफी हैं। एक साल की जरूरत है। क्योंकि यहाँ मुख्तलिफ मौसम होते हैं। उन मौसमों में लोगों की क्या हालत होती है, यह उनके साथ रहे बगैर नहीं मालूम हो सकता है। इसलिए जाड़े में श्रीनगर में रहना जरूरी था। तब मुझे पता चलता कि लोगों की क्या हालत होती है। लेकिन इतना समय मेरे पास नहीं था, न मैंने इतना समय देना जरूरी ही समझा। यह पहला ही मौका था। अगर परमेश्वर ने चाहा और उसे जरूरत महसूस हुई तो वह मुझे यहाँपर दुबारा भी ला सकता है। लेकिन पैदल घूमनेवाला किसी जगह को छोड़ता है तो फिर से आने का खयाल नहीं कर सकता है, सब कुछ ईश्वर पर छोड़ता है। एक साल का अनुभव चार महीने में नहीं आ सकता था, फिर भी मैंने जितना देखा, वह हालत का अन्दाजा करने में काफी था।

प्यार करने की मंशा

मेरा तीसरा काम, मंशा थी—प्यार करना। इन चार महीनों में एक भी मौका मुझे याद नहीं है, जब कि प्यार के सिवाय और कोई खयाल मेरे मन में आया हो। मेरे मुँह से कोई शब्द निकला हो। वैसे शब्द तो काफी निकले हैं और सामने जो लोग आये, उन्हें मैंने डाँटा-फटकारा भी है, लेकिन उन्होंने उस डाँट में और फटकार में प्यार ही महसूस किया और मैंने उन्हें जितना डाँटा और फटकारा, उन्होंने उतना ही अपने में और मुझमें नजदीकी महसूस की। परमात्मा की कृपा थी कि प्यार करने का मेरा इरादा पूरा हुआ। जहाँ तक ये तीनों चीजें मिलकर हालात को पहचानने और समझने की बात थी, उसमें मैं जो समझा, वह थोड़ा-थोड़ा लोगों के सामने रखता गया। खानगी में और जाहिरा तौर पर भी मैं बोला हूँ। उसमें जो फर्क रहा, वह इतना ही रहा कि जो बात चंद लोग समझ सकते हैं, वह मैंने चन्द लोगों के सामने रखी और जो बात आम लोग समझ सकते हैं, वह मैंने आम लोगों के सामने रखी। इसके अलावा और कोई फर्क उन दोनों में नहीं रहा। इस तरह का फर्क करने का माद्दा मुझमें नहीं है। मैं जो बोलता हूँ, वह समझनेवाले की कूवत देखकर बोलता हूँ। मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि जहाँ अक्सर किसीको जाने का मौका नहीं मिलता है, मुझे मौका मिला और इसमें किसी का कोई नुकसान होने का था ही नहीं। फौज के सामने भी बात करने का मौका मुझे मिला और मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि मैंने पाया कि फौज में जो लोग आते हैं, वे सचमुच सेवा करने के खयाल से ही आते हैं। यह बात ठीक है कि उनका काफी समय ऐसे ही घूमने में और देखने में जाता है, लेकिन कुल मिलाकर मुझपर यह असर रहा कि उनमे सेवा करने का खयाल है और मेरे विचार उन्होंने प्यार से ग्रहण किये। यहाँपर मैं कई जमातों से मिला। मुसलमान, हिन्दू, सिख, बौद्ध वगैरह जमातें, हरिजन, रिफ्युजी, एक्स-सोल्जर्स वगैरह लोग और कई तबकों के लोग मेरे पास आये और मेरे पास जो था, मैंने उन्हें दिया। इतने में उन्होंने तसल्ली मानी। इससे हम कह सकते हैं कि हमने अपनी प्यार करने तथा प्यार पाने की तीसरी मंशा को भी बहुत कुछ पूरा होते देख लिया। सर्वोदय में प्यार पाना भी एक मुख्य काम है।

यहाँपर लोगों ने तीन-चार दफा मुझे याद दिलाया कि इसी प्रकार का मिशन लेकर भगवान शंकराचार्य कश्मीर आये थे। मैंने कबूल किया कि शंकराचार्य के मिशन का जो स्वरूप था, उससे मेरे मिशन का स्वरूप मिलता-जुलता है। उन्होंने अद्वैत का विचार कहा था। याने इन्सान-इन्सान में कोई फर्क नहीं है, बल्कि इन्सान परमात्मा के नूर से भी जुदा नहीं है, परमात्मा के नूर का ही एक जुज़ है। वह कुल है, यह जुज़ है। यही अद्वैत है।

[चालू]

अनुक्रम

१. लोकशक्ति ही लोकशाही का आधार.
विजयपुर १४ सितम्बर '५९ पृष्ठ ७०३
२. 'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' की ओर.
जम्मू-कश्मीर २० सितम्बर '५९ ,, ७०५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in